अथ षोडशोऽध्यायः

सोळ्हमाँ दैवी अर आसुरी प्रव्रित्ती अद्धयाय

श्रीभगवानुवाच

अभयं सत्त्वसंशुद्धिर्ज्ञान-योगव्यवस्थितिः।
दानं दमश्च यज्ञश्च, स्वाध्यायस्तप आर्जवम्।। १

स्रीभगुवान् बोल्ले

(दैवी गुण छब्बीस मनुख के)

[१]आच्छै काम्माँ कै करणै मैँ, आणै आळे खतर्याँ मैँ।
मन मैँ डर नाँ, हो निर्भयता, [२]सोच समझ मैँ, ब्यौहाराँ मैँ।।
निर्मळ बुद्धी, छळ नाँ करणा, [३]ग्यानप्राप्ति अर मन पै काब्बू।
इन मैँ निस्ठा गहरी रखणा, [४]जघाँ, बखत अर पात्तर, सब नै।।
आप्णी क्समता और जरूरत, सोच समझ कैँ उचित रूप मैँ।
जीवनसाधन देणा दिल तैँ, [५]करम ग्यान के बिसयाँ मैँ अर।।
मन घोड़ै नै कस कैँ रखणा, [६]ग्यान प्रकासी, सुभ सत्कर्मी।
देवाँ का अर देव जिस्याँ का, पूजन अर्चन मान बढाणा।।
जड़ अर चेतन साधन आप्णै, खुद कै अर जन जन कै हित मैँ।
[७]आप्णी रुचि अर ग्यानविधा की, पोत्थी पढणा, ग्यान कमाणा।।
[८]संयम बुद्धी रख कैँ तन-मन, दोन्नूँ के कस्टाँ नै सहणा।
तात्ती सीळी बाळ जगत् की, सह कैँ तपणा कुन्दन होणा।
[९]ओर सरलता बाणी मन की, ब्योहाराँ मैँ बी साद्दापण हो॥ १

अहिंसा सत्यमक्रोधस्त्यागः शान्तिरपैशुनम्।
दया भूतेष्वलोलुप्त्वं मार्दवं ह्रीरचापलम्।। २

[१०]तन तैँ, मन तैँ, वाणी तैँ बी, पीड़ा प्राणी नै नाँ देणा।
[११]सै जो बात जिसी, वा कहणा, [१२]क्रोध न करणा, [१३]त्याग भावना।।
[१४]मन की सान्ती, [१५]नहीँ किसै के, छिद्र उजागर करणा चुगली।
[१६]कस्ट पड्याँ पै, दीन दुखी पै, किरपा करणा कस्ट मिटा कैँ।।

[१७]लालच लोभ नहीँ ए करणा, [१८]नरमी हो ब्योहार वचन मैँ।
[१९]गलत काम तैँ रोक्कण आळी, लोकलाज हो सरम, हया हो।
[२०]चेस्टा व्यर्थ न चञ्चलता हो, निचला बैट्ठै, सान्त रहै॥ २

तेजः क्षमा धृतिः शौचमद्रोहो नातिमानिता।
भवन्ति संपदं दैवीमभिजातस्य भारत।। ३

[२१]मन मैँ स्वाभाविक बळ जिस तैँ, कोए ओर दबा नाँ पावै।
[२२]बुरा करणियै अपकारी पै, क्रोध न करणा, उस नै सहणा।।
[२३]धीरज, थ्यावस, [२४]तन मैँ मन मैँ, ब्योहाराँ मैँ हो सुच्चापण।
[२५]आप्णै जन तैँ, उपकारी तैँ, नाँ उल्टा चाल्लै, द्रोह करै।।
[२६]खुद नै मान्नै कदे बडा नाँ, गुण ये छब्बिस हौँ सैँ उस के।
देवाँ के, आनन्द ग्यान के, गुण ले कैँ जो उत्पन अर्जन।।
दिव्य गुणाँ की सम्पत्ती या, स्रेस्ठ भरत के बंसज अर्जन।
देख, भला, सै तेरै मैँ के?॥ ३

दम्भो दर्पोऽभिमानश्च, क्रोधः पारुष्यमेव च।
अज्ञानं चाभिजातस्य, पार्थ संपदमासुरीम्।। ४

(असुर सुभा के छह लक्खण)

[१]ढोँग, दिखावा 'सै', 'नाँ सै' का, [२]तन-धन-जन-बळ-विद्या-कारण।
फूल्ल्या माणस इतरावै अर, [३]मत्तैँ कोण भला सै बढ कैँ।।
खुद नै अतिपूज्य, बडा समझै, [४]गुस्सा, जिस तैँ माणस होवै।
आप्णै आप्पै तैँ वो बाहर, [५]बोल्ली-चाल्ली ब्योहाराँ मैँ।।
ल्हूक्खापण हो निस्टुरता अर, [६]नाँ-समझी हो, कुछ नाँ समझै।
छह ये व्रित्ती, खोट सुभा के, होवैँ उन मैँ, असुर प्रव्रित्ती।।
ले कैँ जलमैँ देह गेह मैँ, रमड़े आप्णै आप्ण्याँ मैँ ए।
सुख के भोग्गी 'मैँ', 'मम'ता के, भावाँ मैँ धँस आप्णै आग्गै।
किमे किसै नै नाँ ए गिणदे, असुरसुभावी हौँ वैँ माणस॥ ४

दैवी संपद्विमोक्षाय, निबन्धायासुरी मता।

(देव, असुर सुभावाँ का फळ)

'देव' प्रकासित ग्यान सुभा तैँ, ग्यान्नी माणस तत्त्व समझदे।
तेर-मेर मैँ रहँदे नाँ जो, देक्खैं सब मैँ एक च्याँनणा।।
उन की सै जो, उन तैँ आई, देव बणावै, उन मैँ ले ज्या।
उन के गुण सैँ 'दैवी सम्पद्', दैवी सम्पद् मुक्ति करावै।।
जितणे ओर जिसे गुण हौँ सैँ, उतणे ओर उसे बन्धन तैँ।
छूट्टै माणस उतणा सुख पा, आग्गै बढदा तोड़ जगत् के।।
बन्धन सारे परम ततव मैँ, रळदा मर कैँ, जा कैँ इत तैँ।
जग मैँ बान्द्धै असुरप्रव्रित्ती, ग्यान्नी सारे मान्नैँ या सैँ।।

मा शुचः संपदं दैवीमभिजातोऽसि पाण्डव।। ५

मतन्याँ सोच करै तैँ अर्जन, देवगुणाँ नै ले कैँ पैदा।
होया सै तैँ पाण्डू के सुत॥ ५

द्वौ भूतसर्गौ लोकेऽस्मिन्, दैव आसुर एव च।
दैवो विस्तरशः प्रोक्त, आसुरं पार्थ मे शृणु।। ६

(दो तह्याँ की व्रित्ति जगत् मैँ)

दो तह्रियाँ की सब भूत्ताँ की, स्रिस्टी सै इस दुनियाँ मैँ या।
[१]देवगुणाँ तैँ घणी भरी अर, [२]तन मन अर इन नै सुख देन्दे।।
जड़, चेतन की ममता मैँ बँध, पड़े जण्याँ की स्रिस्टी दूज्जी।
[१]देवगुणाँ तैँ भरी-पुरी या, खोल्ह-खोल्ह कैँ सै बतलाई।।
[२]असुर प्रव्रित्ती आळी स्रिस्टी, दुनियाँ मैँ से फैल्ली भोत्तै।
पहले बान्द्धै प्राण धारदै, तन मैँ अर उस नै सुख देन्दे।।
जड़ अर चेतन भौतिक सब मैँ, ममता फन्दा मजबूत बणा।
उस नै पारथ, पिरथा के सुत, अर्जन, मेरै तैँ तैँ सुण ले॥ ६

प्रवृत्तिं च निवृत्तिं च, जना न विदुरासुराः।
न शौचं नापि चाचारो, न सत्यं तेषु विद्यते।। ७

(असुर प्रव्रित्ती के लच्छण)

[१]जिस तैँ धारण स्रिस्टी का हो, उस कर्तब मैँ सही प्रव्रित्ती।
[२]इस तैँ उल्टी हानि जगत् की, हो नाँ जिस तैँ, सही निव्रित्ती।।

[१]के सै करणा, के नाँ करणा, जिस तैँ होवै भला घण्याँ का।
ये नाँ जाणैँ असुर भाव मैँ, रहँदे माणस स्वार्थपरायण।।
[२]नाँ सुद्धी तन मन वाणी की, बाह्य भीतरी, उन मैँ हो सै।
[३]रहणी, करणी, बोल्ली, चाल्ली, आचार सही नाँ उन मैँ हो सै।
[४]ओर सचाई उन मैँ नाँ हो॥ ७

असत्यमप्रतिष्ठं ते, जगदाहुरनीश्वरम्।
अपरस्परसंभूतं, किमन्यत् कामहैतुकम्।। ८

[५]सत्य जगत् मैँ नाँ चाल्है, धर्म-अधर्म न किम्मे होवै।
जिस पै इस नै टिकदा मान्नाँ, [६]नाँ ए इस का सासक माल्लक।।
नहीँ चलाणै आळा कोए, [७]बिना रुकावट नित्य निरन्तर।
अपर बणै सै कारण पर का, कारण कारज इक-दूज्जै के।।
ओर किमे के इस का कारण? [८]जग का कारण चाह बढण की।
आप्पै आप बढै सै खुद तैँ, ओर कह्वाँ के, बिसै बासना।
चाहत हो सै जग का कारण॥ ८

एतां दृष्टिमवष्टभ्य, नष्टात्मानोऽल्पबुद्धयः।
प्रभवन्त्युग्रकर्माणः, क्षयाय जगतोऽहिताः।। ९

या इस दुनियाँ नै देक्खण की, नजर बणा कैँ समझै आप्पी।
रस्ता भटक्यै आप्पै आळे, घाट समझ अर राक्खण आळे।।
पैदा हों सैँ क्रूर करम कर, नाँस करण नै दुनियाँ का वैँ।
गलत राह पै चाल, चला कैँ, बुरा करैँ सैँ दुनियाँ का वैँ॥ ९

काममाश्रित्य दुष्पूरं, दम्भमानमदान्विताः।
मोहाद् गृहीत्वाऽसद्ग्राहान्, प्रवर्तन्तेऽशुचिव्रताः।।१०

उस चाहत का ले कैँ आस्रै, मुस्कल जिस नै पूरा करणा।
ढोँग दिखावा हङ्कार नसा, जन धन कुळ बळ ग्यान जात का।।
इन तैँ जो सैँ भरे गळै तक, मोह भरम अर नाँ-समझी तैँ।
दुनियाँ कै रहणै मैँ बाधक, हठ ले पकड़े मूरखता तैँ।।
करम करैँ सैँ लक्स्य मलिन रख, माहोल बिगाड़न आळे ले।

नेम धरम वैँ ठाणैँ मन मैँ॥ १०

चिन्तामपरिमेयां च, प्रलयान्तामुपाश्रिताः।
कामोपभोगपरमा, एतावदिति निश्चिताः।। ११

'साधन ईब जुटाणे ये सैँ, ये सैँ साधन मेरै धोरै।
रच्छा इन की किस तह्रियाँ हो', चिन्त्या या, जिस की नाँ कोए।।
माप तोल, गिणती, थाह तथा, सम्भव हो सै परळै ताईँ।
ले कैँ आस्रै उस का बैट्ठे, जिन की इच्छा बणी रहै सै।।
उन भोग्गाँ मैँ लाग्गे रहँदे, इतणा ए सै लक्स्य जीण का।
'ये नाँ हों तो, के सै जीणा?', इस निस्चै पै टिक कैँ रहँदे॥ ११

आशापाशशतैर्बद्धाः, कामक्रोधपरायणाः।
ईहन्ते कामभोगार्थमन्यायेनार्थसंचयान्।। १२

'होगा न्यूँ यो', 'वो न्यूँ होगा', आस रखैँ न्यूँ सै माणस।
फन्दे इन के गेरैँ गळ मैँ, बँध कैँ रहँदे खुद तैँ माणस।।
चाहत गुस्सै कै बस होए, इच्छा कै सँग पैदा माणस।
पूरी जै त्रिस्णा, लोभ बणै, हो नाँ चाहत जै वा पूरी।।
आग-बबूळा होवै माणस, बेबस उन कै आग्गै हों सैँ।
चाहैँ अर वैँ करैँ जतन सौ, मनभान्दे भोग्गाँ की खात्तर।
बे-इंसाफी, बे-ईमानी, कर साधन-अम्बार जुटावैँ॥ १२

इदमद्य मया लब्धमिमं प्राप्स्ये मनोरथम्।
इदमस्तीदमपि मे, भविष्यति पुनर्धनम्।। १३

यो सै आज कमाया मन्नै, यो पाऊँगा मन मैँ सोच्च्या।
यो सै इब अर मेरै धोरै, होगा आग्गै ओर जतन कर॥ १३

असौ मया हतः शत्रुर्, हनिष्ये चापरानपि।
ईश्वरोऽहमहं भोगी, सिद्धोऽहं बलवान् सुखी।। १४

वो सै मन्नै मार्‌या दुस्मन, मारूँगा अर ओराँ नै बी।
इतणी दोल्लत, नोक्कर-चाक्कर, हुकम चलाऊँ इन पै मैँ सूँ।।
मैँ सूँ भोग्गी, भोग करण के, साधन सारे मेरै धोरै।

मैँ सूँ सिद्ध, जिसा मैँ चाहूँ, पूरी हो वो आप्णै आप्पै।
मैँ सूँ ताकतवर सब तह्यिाँ, भोत सुखी तन मन जन धन तैँ॥ १४

आढ्योऽभिजनवानस्मि, कोऽन्योऽस्ति सदृशो मया।
यक्ष्ये दास्यामि मोदिष्य, इत्यज्ञानविमोहिताः।। १५

दोलतमन्द, रहीस, धनी मैँ, खान्दानी, मैँ, मेरै बरगा।
कोण ओर सै, यग्ग्य करूँगा, दान करूँगा, आनँद ल्यूँगा।
अग्ग्यान मोह तैँ, न्यूँ वैँ भरमे॥ १५

अनेकचित्तविभ्रान्ता, मोहजालसमावृताः।
प्रसक्ताः कामभोगेषु, पतन्ति नरकेऽशुचौ।। १६

कई तह्याँ की चित की भ्रान्ति, मोहजाळ मैँ फँसे बँधे वैँ।
गळ तईँ डूब्बे बिसैभोग मैँ, पड़दे नरकाँ गन्द्याँ मैँ सैँ॥ १६

आत्मसंभाविताः स्तब्धा, धनमानमदान्विताः।
यजन्ते नामयज्ञैस्ते, दम्भेनाविधिपूर्वकम्।। १७

खुद्दै खुद नै बडा मानदे, अकड़ू, आप्णी धन अर दोल्लत।
इज्जत सोहरत मान बड़ाई, घणै नसै मैँ इन कै रहँदे।।
देव पूजदे पूज्जा-पाट्ठी, जस की खात्तर, नामकरण नै।
नाममात्र के यग्ग्याँ तैँ वैँ, करैँ दिखावा बिना बिधी कै॥ १७

अहंकारं बलं दर्पं, कामं क्रोधं च संश्रिताः।
मामात्मपरदेहेषु, प्रद्विषन्तोऽभ्यसूयकाः।। १८

न्यूँ वैँ आप्णा जीवण जीवैँ, 'मैँ' 'मैँ' करदे तन मन धन जन।
इन की ताकत आप्णी समझैँ, घोर घमण्डी, बिसैभोग की।।
इच्छा पै अर गुस्सै मैँ वैँ, टिके सदा ए रहँदे माणस।
आप्णै ओर परायै तन मैँ, बैट्ठै मत्तैँ द्वेस करैँ सैँ।
दुनियाँ भर मैँ खोट काढदे, आच्छै मैँ बी खाम्मी खोज्जैँ॥ १८

तानहं द्विषतः क्रूरान्, संसारेषु नराधमान्।
क्षिपाम्यजस्रमशुभानासुरीष्वेव योनिषु।। १९

खुद नै, खुद के बन्द्याँ नै तज, ओर सबै तैँ द्वेस करणिये।
मार-काट मैँ, कस्ट देण मैँ, लाग्गे रहँदे करड़ै मन के ।।

मनुखाँ मैँ जो नीच सुभावी, असुभ अमङ्गल करैँ निरन्तर।
उन नै मैँ इन संसाराँ मैँ, सही तह्याँ तैँ नेम धरम तैँ।।
चाल्लण आळी इस दुनियाँ मैँ, काया माया मैँ खुस रहँदी।
जूणाँ मैँ सूँ गेरूँ अर्जन॥ १९

आसुरीं योनिमापन्ना, मूढा जन्मनि जन्मनि।
मामप्राप्यैव कौन्तेय, ततो यान्त्यधमां गतिम्।। २०

असुर भाव की, तन मन धन की, आप्णै हित की, आप्णै सुख की।
सोच्चण आळी, उस मैँ रमड़ी, इसी जूण मैँ पड़े मोह मैँ।।
पड़े भरम मैँ जलम-जलम मैँ, मन्नै नाँ ए पा कैँ अर्जन।
उस तैँ जाँ वैँ नीच जूण मैँ॥ २०

त्रिविधं नरकस्येदं, द्वारं नाशनमात्मनः।
कामः कोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत्।। २१

(नरक जाण के तीन दुरज्जे)

तीन तह्याँ का नरक लोक का, यो दरवज्जा नस्ट करणियाँ।
तन मन इन्द्री बुद्धी का अर, उस मैँ भासित जीवात्मा का।।
इच्छा गुस्सा लालच सैँ जो, इन तीन दुरज्याँ तैँ लिकड़्या।
मन नाबूद करै माणस नै, इस कारण ये तीन्नूँ छोड्डै।।

(माणस नै खुद की खोज करी)

माणस तन के च्यार प्रयोजन, [1]इच्छा मन की पूरी होवैँ।
[2]तन नै मन नै सुख जो होवै, इस कै खात्तर जड़ अर चेतन।।
साधन जोड़ू सुखभोग करूँ, [3]इन दोन्नूँ कै फन्द्याँ मैँ बँध।
पतन कितै नाँ मेरा होवै, इस की खात्तर नियम व्यवस्था।।
प्रक्रिति नियम कै अनुकूल रहूँ, न्यूँ ए रहणा धारैगा अर।
व्यस्टि समस्टी देस काल मैँ, सामञ्जस्य रहै समरसता।।

[1]इसै भाव तैँ देवतत्त्व की, बात मनुख कै मन मैँ आई।
उन नै कर कैँ अनुकूल यग्ग्य तैँ, जड़ अर चेतन साधन आप्णे।।
भोत जुटा कैँ विधि-विधान तैँ, त्याग द्रव्य का उन की खात्तर।

कर कैँ सोच्च्या माणस नै था, व्यस्टि समस्टी का सुख पाणा।।
यो सब पा कैँ सुखी मनुख हो, भोग्गाँ तैँ हो त्रिप्त बिचारै।

[२]'पाया मन्नै, खोया के सै?, सै सार तत्त्व के हाथ लग्या?'।।
व्यस्टि, समस्टी, सारी दुनियाँ, इस नै माणस खोज्जण चाल्ल्या।
तिणकै-तिणकै खोल देख कैँ, पाया ओड़ न इस का कोए।।
देक्ख्या सब-कुछ आणा-जाणा, सुख-दुख देक्खे आणे-जाणे।
फिर बी दुनियाँ चाल्ली जा सै, कोण चलावणियाँ? सै कित वो?।।
क्यूक्कर खोज्जूँ दुनियाँ मैँ मैँ? दुनियाँ का यो सार काढदै।
ऋषि कणाद नै सात पदारथ, काढ बण्या जग उन तैँ पाया।।
इन मैँ बी सै सूक्समतम अणु, वो बी देक्ख्या भाग-दोड़ मैँ।
उस तैँ आग्गै नाँ वो प्होंचे, साइँस लग्या सै उस्सै रस्तै।।
ईब तईँ नाँ खोज सक्या सै, देस काल अर पिण्डाँ की थाह्।
इन कै ऊप्पर परम ततव सै, कोए कद वो खोज्जै गा के?।।

[३]गोतम रिसि नै मात्था मार्‍या, 'तरक, जुगत तैँ उस नै खोज्जूँ'।
कह नाँ पावैँ बडे बिग्यानी, आज बताऊँ किस तह्रियाँ मैँ?।।
जग चाल्लण मैँ खास जरूरी, चेतन आत्मा खोज्ज्या उन नै।
गुण बी उस मैँ कई बताए, वो देक्खण ओर पिछाणन नै।।

[४]कपिल रिसी नै दुनिया परखी, तरक बिचारे, ओड न पाया।
सात पदारथ तैँ अर हट कैँ, पाँच भूत पै ए वैँ आए।।
उन का बी वैँ मूळ खोजदे, त्रिगुणा प्रक्रिती ताँईँ पौंह्चे।
या बी पर थी जड़ ए, इस तैँ, ऊप्पर उन नै पुरुस बिचार्‍या।।
इन मैँ बी सै कोण परम यो, निर्णै वैँ बी नाँ कर पाए।

[५]पतञ्जली नै रस्ता काड्ढ्या, ब्रह्माण्ड'र तन मैँ फरक किमे नाँ।।
बाहर जग मैँ, भीत्तर तन मैँ, जड़ अर चेतन एक जिसे सैँ।
भाग्गै क्यूँ कस्तूरीम्रिग-सा? कर तैँ माणस खोज भीतरै।।

पाया उन नै चलदी-फिरदी, काया मैँ मन प्रबल सबै पै।
पहल्याँ मन नै रोक बाँध कैँ, पाया आनन्द समाधी मैँ।।
वा बी पर नित्य निरन्तर, हो नाँ सकदी, उस तैँ उठ कैँ।
अथवा जो नर कर नाँ पावैँ, उन कै खात्तर रस्ता खोज्ज्या।।

[६]सारे बेद्दाँ, सास्त्र पुराणाँ, मानव मन नै मथ कैँ भोत्तै।
पुरुस ततव पै जोर लगा कैँ, ब्रह्म ततव तैँ हो कैँ फिर वो।।
परम ब्रह्म तक पौंह्चे रिसि थे, जीव परम सै, परम जीव सै।
समझ बताई रिसियाँ नै वा, जिस तैँ छूट्टै सुख तैँ दुख तैँ।।
दोन्नूँ देन्दे पुण्य पाप तैँ, उन कै बीज करम तैँ छूट्टै।
करमाँ के मूळ जनम-मरण तैँ, न्यूँ मोक्स प्रयोजन परम कह्या।।

जोग न रहणै देन्दा अर्जन, मन इन च्यारूँ पुरुसार्थाँ कै।
इन तीन दुरज्ज्याँ तैँ लिकड़्या, मन यो नाबूद करै माणस नै।
इस कारण ये तीन्नूँ छोड्डै॥ २१

एतिर्विमुक्तः कौन्तेय, तमोद्वारैस्त्रिभिर्नरः।
आचरत्यात्मनः श्रेयस्, ततो याति परां गतिम्।।२२

(इन तैँ बच कैँ परम गती हो)

आत्मदेव कै जोत रूप नै, ढँकणै आळे अँधियारे इन।
तमोभाव के परम उधारण, तीन दुरज्ज्याँ तैँ छूट्ट्या नर।।
करदा आप्णा कल्ल्याण सही, उस तैँ पावै सब तैँ आच्छी।
सदा खुसी मैँ रहणै आळी, जीत्तै जी मन के सब सुख दुख।।
उन तैँ छूट्ट्या जीवन्मुक्ती, तन नै तज कै ब्रह्म परम हो।
जलम मरण कै चक्कर मैँ, आवै सै नाँ माणस अर्जन॥ २२

यः शास्त्रविधिमुत्सृज्य, वर्तते कामकारतः।
न स सिद्धिमवाप्नोति, न सुखं न परां गतिम्।।२३

(सास्त्रबिधी तैँ चलणा चहिये)

[१]के सै करणा, [२]के नाँ करणा, [३]किस तह्यिाँ करणा, नाँ करणा।
[३]सुख की प्राप्ती जिस तैँ होवै, या बात बतावैँ सैँ सास्तर।।
उन की बात परम या होवै, आदेस, प्रमाण, परम सासन।
इन्हैँ पढान्दे, इन्हैँ बतान्दे, चाल्लण की अर राह सिखान्दे।।
ग्रन्थाँ, गुरुआँ, आचार्याँ अर, सिस्टजनाँ की कही बिधी नै।
तज कै चाल्लै मनमर्जी तैँ, बिना रास कै घोड़ा चाल्लै।।
रथ पै बैट्ठ्यै सारथि, रथ की, होगी हालत जो, वा होगी।
नाँ वो लक्स्य कदे बी पावै, जिन्दै सुख नाँ काया तज कैँ।
परमगती नाँ माणस पावै॥ २३

तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते, कार्याकार्यव्यवस्थितौ।
ज्ञात्वा शास्त्रविधानोक्तं, कर्म कर्तुमिहार्हसि।। २४

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे दैवासुरसम्पद्विभागयोगो नाम षोडशोऽध्यायः।।१६।।

(अर्जन तैँ दी सल्हा किसन नै)

इस लिये सास्त्र प्रमाण तन्नै, के किस बिध करणा, नाँ करणा।
कद करणा, अर कद नाँ करणा, इस का निर्णै करणै मैँ सै।।
या बात बताणै मैँ हौँ सैँ, आचार्य गरू अर बड़ळे बी।
सास्त्रबिधी कै नीच्चै सारे, के करणा अर के नाँ करणा।।
जाण-समझ इब सास्त्रबिधी तैँ, कह्या करम सै तैँ कर सकदा।
अर्जन, कर ले निर्णै खुद तैँ, लड़णा सै, या नाँ ए लड़णा।
खड़ी फौज ये आम्हीँ स्याम्हीँ, बाट देख ह्ी तेरी ए सैँ॥ २४

स्रीमती सीत्तादेब्बी अर स्रीस्रीनिवास सास्तरी कै बेट्टै सिवनारायण सास्तरी कै हरियाणी भास्सा कै गीत्तायन काब्ब्यभास्य मैँ सोळ्हमाँ अद्ध्याय पूरा होया।।१६।।

पूर्वसलोकयोग ५५० + २४ = ५७४